

CBSE Class 7 Social Science Important Questions Civics Chapter 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना

आतलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.

समोआ द्वीप क्या है और यह कहाँ स्थित है?

उत्तर:

समोआ द्वीप प्रशान्त महासागर के दक्षिण में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का ही एक भाग है।

प्रश्न 2.

द्वीपों पर सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या था?

उत्तर:

द्वीपों पर मछली पकड़ना सबसे महत्वपूर्ण कार्य था।

प्रश्न 3.

समोआ द्वीप में खाना पकाने का काम कहाँ होता था और कौन करता था?

उत्तर:

समोआ द्वीप में खाना पकाने का काम, अलग से बनाए गए रसोई घर में होता था। जहाँ लड़कों को अधिकांश काम करना होता था।

प्रश्न 4.

लड़के और लड़कियों के अलग-अलग खेलौने उन्हें क्या बताते थे?

उत्तर:

लड़के और लड़कियों के अलग-अलग खेलौने उन्हें यह बताते थे कि बड़े होने पर उनका भविष्य अलग-अलग होगा; उनकी पृथक् विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी।

प्रश्न 5.

क्या समाज में पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं को समान समझा जाता है?

उत्तर:

नहीं, अधिकांश समाजों में पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं और उनके काम के महत्व को समान नहीं समझा जाता।

प्रश्न 6.

सारी दुनिया में घर के काम की जिम्मेदारी किनकी होती है?

उत्तर:

सारी दुनिया में घर के काम की जिम्मेदारी स्त्रियों की ही होती है।

प्रश्न 7.

घर का काम करने वाले नौकर-नौकरानियों को मजदूरी कम क्यों दी जाती है?

उत्तर:

घरेलू काम का अधिक महत्त्व नहीं है, इसलिए घरेलू कार्य करने वाले मजदूरों को मजदूरी भी कम दी जाती है।

प्रश्न 8.

बालवाड़ी की सुविधा होने से स्त्रियों को क्या लाभ होता है?

उत्तर:

कार्य क्षेत्र में बालवाड़ी की सुविधा होने से (i) बहुत सी महिलाओं को घर से बाहर काम करने में सुविधा होती है। (ii) इससे बहुत सी लड़कियों को स्कूल जाना भी संभव हो सकेगा।

प्रश्न 9.

'महिलाओं पर दोहरा बोझ है।' कथन का क्या आशय है?

उत्तर:

बहुत-सी स्त्रियाँ घर के अन्दर व बाहर दोनों जगह काम करती हैं। इसे 'महिलाओं पर दोहरे-बोझ' में रूप में जाना जाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.

समाज लड़के और लड़कियों में किस प्रकार अन्तर स्पष्ट करता है?

उत्तर:

समाज लड़के और लड़कियों में अन्तर करना बहुत कम आयु से ही शुरू कर देता है। यथा-

(i) उन्हें खेलने के लिए भिन्न-भिन्न खिलौने दिये जाते हैं। ये खिलौने बच्चों को यह बताने का माध्यम बन जाते हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री-पुरुष बनेंगे, तो उनका भविष्य अलग-अलग होगा।

(ii) इसी प्रकार लड़कियों को कैसे कपड़े पहनने चाहिए, पार्क में लड़कों व लड़कियों को कौन-कौन से खेल खेलने चाहिए, लड़कियों को धीमी आवाज में बात करनी चाहिए और लड़कों को रौब से। ये सब बच्चों को ये बताने के तरीके हैं कि जब वे बड़े होंगे तो उनकी अपनी पृथक् विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी।

प्रश्न 2.

'समाज में स्त्रियों की भूमिकाओं व उनके काम को कम महत्त्व दिया जाता है। क्यों?

उत्तर:

सारी दुनिया में घर के काम की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों की ही होती है, जैसे-देखभाल सम्बन्धी कार्य, परिवार का ध्यान रखना, विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों का भी। घर में भोजन-पानी की व्यवस्था करना, घर की साज-सज्जा तथा कपड़े धोना व प्रेस करना आदि कार्य भी घर में स्त्रियाँ करती हैं।

चूँकि घर के अन्दर किये जाने वाले कार्यों को महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाता। यह मान लिया जाता है कि वे तो स्त्रियों के स्वाभाविक कार्य हैं, इसलिए उनके लिए पैसे देने की कोई जरूरत नहीं है। इसीलिए समाज इन कार्यों को अधिक महत्त्व नहीं देता।

प्रश्न 3.

घरेलू काम करने वाले घरेलू नौकर कौन-कौनसे काम करते हैं?

उत्तर:

स्त्रियों को घरेलू काम में मदद करने के लिए बहुत से घरों में, विशेषकर शहरों में लोगों को घरेलू काम के लिए लगा लिया जाता है। ये अनेक काम करते हैं, जैसे- झाड़ू लगाना, सफाई करना, डस्टिंग करना, कपड़े और बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे बच्चे और बुजुर्गों की देखभाल करना आदि।

प्रश्न 4.

घरेलू कार्य हेतु नौकरी करने वालों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाता है और क्यों?

उत्तर:

घरेलू काम का समाज की दृष्टि में अधिक महत्त्व नहीं है, इसीलिए इन्हें मजदूरी भी कम दी जाती है। ये लोग सुबह 5 बजे से देर रात 12 बजे तक कार्य करते हैं। जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद प्रायः उन्हें नौकरी पर रखने वाले उनसे सम्मानजनक व्यवहार नहीं करते हैं।

प्रश्न 5.

'घरेलू स्त्रियाँ जो काम करती हैं, वह भारी और थकाने वाला शारीरिक काम होता है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

घरेलू कुछ कार्यों में बहुत शारीरिक श्रम लगता है। यथा-

- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में औरतों और लड़कियों को दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और लड़कियों को जलाऊ लकड़ी के भारी गट्टर सिर पर ढोने पड़ते हैं।
- कपड़े धोने, सफाई करने, झाड़ू लगाने और वजन उठाने के कामों में झुकने, उठने और सामान उठाकर लेकर चलने की जरूरत होती है।
- खाना बनाने के कार्य में लम्बे समय तक गर्म चूल्हे के सामने खड़ा रहना पड़ता है।

स्पष्ट है कि स्त्रियाँ जो कार्य करती हैं, वह भारी और थकाने वाला शारीरिक काम होता है।

प्रश्न 6.

स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक काम करती हैं। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

घरेलू और देखभाल के कामों में लम्बा समय लगता है। यदि हम स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले घर के और बाहर के कामों को जोड़ें तो हमें पता चलता है कि कुल मिलाकर स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक काम करती हैं। निम्न तालिका द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है-

तालिका-भारत के केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन के 1998-99 के आँकड़े

राज्य	स्त्रियों के वेतन सहित कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	स्त्रियों के अवैतनिक घरेलू काम के घंटे (प्रति सप्ताह)	स्त्रियों के कुल काम के घंटे	पुरुषों के अवैतनिक कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	पुरुषों के अवैतनिक घरेलू काम के घंटे (प्रति सप्ताह)	पुरुषों के कुल काम के घंटे
हरियाणा	23	30	53	38	2	40
तमिलनाडु	19	35	54	40	4	44

स्पष्ट है कि हरियाणा में प्रति सप्ताह स्त्रियाँ जहाँ 53 घंटे कार्य करती हैं, वहाँ पुरुष 40 घंटे कार्य करते हैं। इसी प्रकार तमिलनाडु में स्त्रियाँ जहाँ 54 घंटे कार्य करती हैं, वहाँ पुरुष 44 घंटे ही कार्य करते हैं।

प्रश्न 7.

महिलाएँ घर के बाहर कार्य कर सकें इसके लिए भारत सरकार ने क्या कार्य किए हैं?

उत्तर:

महिलाएँ घर के बाहर कार्य कर सकें इसके लिए भारत सरकार ने निम्नलिखित कार्य किए हैं-

(i) पूरे देश में गाँवों में सरकार ने आंगनवाड़ियाँ और बालवाड़ियाँ खोली हैं।

(ii) शासन ने एक कानून बनाया है जिसके तहत यदि किसी संस्था में महिला कर्मचारियों की संख्या 30 से अधिक है तो उसे वैधानिक रूप से बालवाड़ी (क्रेश) की सुविधा देनी होगी।

(क) बालवाड़ी की व्यवस्था होने से बहुत-सी महिलाओं को घर से बाहर जाकर काम करने की सुविधा होगी।

(ख) इससे बहुत-सी लड़कियों का स्कूल जाना भी संभव हो सकेगा।